वी.यू. में मध्यप्रदेश में बकरी पालन की संभावनाएँः आजीविका सुरक्षा के लिए एक टिकाऊ मार्ग विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन

जबलपुर। आज दिनांक 14 नवंबर 2019 को प्रातः 11:00 बजे से नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के अंर्तगत सभागार, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री लखन घनघोरिया जी, माननीय कैबिनेट मंत्री–सामाजिक न्याय एवं निःशक्तजन कल्याण विभाग अनुसूचति जाति कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन भोपाल के कर कमलों से हुआ। इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि एवं डॉ. अजय विश्नोई जी, माननीय विधायक (पाटन), श्री अशोक ईश्वरदास रोहाणी जी, माननीय विधायक (केन्ट) तथा श्री विनय सक्सेना जी, माननीय विधायक (उत्तर–मध्य) जबलपुर की उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि गण डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्र जी, माननीय संस्थापक कुलपति, ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर, जिनके सौजन्य से इस एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन करना संभव हो सका है। राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. (डॉ.) पी.डी. जुयाल जी, माननीय कुलपति, ना.दे.प.चि.वि. वि., जबलपुर की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में भव्य आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत व चलचित्र की प्रस्तुति, दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। स्वागत भाषण–डॉ. सुनील नायक, आयोजन सचिव/संचालक विस्तार शिक्षा द्वारा **मध्यप्रदेश में बकरीपालन की अपार संभावनाओं एवं आजीविका सुरक्षा के लिये एक टिकाऊ मार्ग** राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम की श्रृखंला में मुख्य अतिथियों, विशेष अतिथियों, सारस्वत अतिथियों, कार्यक्रम में अध्यक्ष एवं अतिथि का स्वागत/अभिनंदन शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर किया गया है। तत्पश्चात् राष्ट्रीय संगोष्ठी स्मारिका फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत प्रकाशित विस्तार साहित्य सामग्रीयों (बुलेटिन्स) का विमोचन किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम में सारस्वत एवं विशेष अतिथियों ने अपने–अपने उद्बोधन से सभी को अवगत कराया। इनमें विशेष अतिथि श्री विनय सक्सेना जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि उनके पास उपलब्ध 200 एकड़ भूमि का उपयोग बकरियों के लालन –पालन, चराई, एवं प्रोयोगिक कार्यो के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

तत्पश्चात् विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति डॉ. गोविंद प्रसाद मिश्र जी ने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती के अवसर पर निर्मला बकरी की उपयोगिता मानव स्वास्थ्य के लिए उपयोगी निरूपित किया, साथ ही आपने वर्तमान प्रदेश सरकार को विश्वविद्यालय हेतु दो दुग्धविज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालयों क्रमशः जबलपुर एवं ग्वालियर में स्थापना की सौगात हेतु साधुवाद देते हुए भविष्य में विश्वविद्यालय के अंतर्गत एक बकरी अनुसंधान केन्द्र की स्थापना पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री लखन घनघोरिया जी, ने उद्बोधन देते हुए कहा कि बकरी स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, साथ ही यह भी बताया कि यह उनकी पुस्तैनी पेशा रहा है। अतः उन्हें काफी अनुभव है, बकरी पालन भूमिहीन किसानों की आजीविका का अच्छा साधन है। बकरी अनुसंधान केन्द्र जबलपुर में स्थापना के संबंध में उन्होनें माननीय मुख्यमंत्री जी से बात करने के लिए आश्वस्त किया।

राष्ट्रीय कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्बोधन माननीय कुलपति जी ने सारगार्मित विचार व्यक्त करते हुये इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से मध्यप्रदेश में बकरी पालन की अपार संभावनाये हैं, जो सीमांत/लघु कृषकों व भूमिहीनों तथा आदिवासी अंचलों के ग्रामीण जनों के लिये आजीविका सुरक्षा के लिए एक टिकाऊ मार्ग निरूपति किया होना बताया, साथ ही कहा कि इस संगोष्ठी के दौरान तकनीकी सत्रों में देश के प्रख्यात वैज्ञानिकों द्वारा प्रदत्त तकनीकी ज्ञानवर्धक जानकारियों, बकरीपालकों के मध्य संवाद द्वारा एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी की अनुशंसाओं के माध्यम से बकरी पालन के क्षेत्र में उन्नति के द्वार प्रशस्त होगें।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के अवसर पर विश्वविद्यालय के पशुधन प्रक्षेत्र, आमानाला पर पाली जा रही उन्नत नस्ल के बकरे–बकरियों क्रमशः सिरोही, बारबरी एवं ब्लेक बंगाल नस्लों का जीवांत प्रदर्शन भी आयोजित किया गया, जिसका माननीय कुलपति जी द्वारा मुख्य अतिथि, अतिथिगणों एवं बकरीपालकों को भ्रमण एवं अवलोकन कराया, जो कि एक आकर्षण का केन्द्र रहा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र वैज्ञानिक प्रगतिशील किसानों के मध्य संवाद पर आधरित रहा जिसकी अध्यक्षताः डॉ. डी.वी. रागनेकर, प्रख्यात पशु चिकित्सा एवं विस्तार विशेषज्ञ सह–अध्यक्ष, डॉ. हरि.आर। इस सत्र में श्री दीपक पाटीदार प्रगतिशील बकरी पालक, धार, म.प्र. द्वारा मध्यप्रदेश में बकरीपालन की संभावनाएँ, श्री भीष्म सिंह, कार्यकारी निर्देशक, बकरी ट्रस्ट, लखनऊ द्वाराः स्थायी आजीविका सुरक्षा के लिये वाणिज्यिक बकरी पालन इस विषय श्री प्रसाद नारायण देशपांडे, प्रगतिशील बकरी पालक शीटी परिवर कल्याण संस्थान, सांगली, महाराष्ट्र ने विचार साझा किये। तत्पश्चात् वाणिज्यिक बकरी पालन पर श्री दिनेश टी. भोंसले, क्षेत्रीय बिक्री निर्देशक, एबी बिस्टा, दक्षिण एशिया। द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षताः डॉ. कुशमाकर शर्मा, पूर्व–ए.डी.जी. ईक्यू आर, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, सह–अध्यक्षः डॉ. एस.एन.एस. परमार, डॉ. श्रीकांत जोशी, डॉ. जे.के. भारद्वाज एवं डॉ. मधुस्वामी तथा रिर्पाटियर्सः डॉ. जी.पी. लखानी व डॉ. बिस्वजीत रॉय। इस सत्र में डॉ. पी.के. राउत, प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदमू, (उ.प्र.) द्वारा तकनीकी प्रिजेंटेशन आनुवांशिक सुधार को बढ़ाने और म.प्र. में प्रजनन रणनीतियों को लागू करने हेतु बकरी की नस्लों का चयन। डॉ. आर.वी.एस. पवैया, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा बकरी स्वास्थ्य प्रबंधन और कल्याण, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम (उ.प्र.) डॉ. अजय शिंडे, प्रमुख वैज्ञानिक, केन्द्रीय भेड़ ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा

वाणिज्यिक बकरी पालनः मुद्दे और समाधान एवं डॉ. ए.के. दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, बकरियों पर शोध के लिए केन्द्रीय बकरी शोध संस्थान, मखदूम (उ.प्र.) द्वारा बकरी उत्पादन प्रणालीः सामाजिक–आर्थिक मुद्दों पर विस्तार से तकनीकी जानकारी एवं बकरी पालकों की समस्याओं/शंकाओं का त्वरित निदान करते हुये बकरी पालकों को लाभान्वित कराया।

तकनीकी सत्रों के समापन के पश्चात् मध्यप्रदेश में बकरीपालन की संभावनायेंः आजीविका सुरक्षा के लिये एक टिकाऊ मार्ग पर विचार–विमर्श एवं सिफारिशों पर गहन चिंतन हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में वि.वि. के प्राध्यापकों, छात्र–छात्राओं, फार्मर फर्स्ट परियोजना के बकरी पालकों, नाबार्ड स्वसहायता समूहों के 50 से अधिक बकरी पालकों एवं प्रदेश व देश के किसानों बकरीपालकों की सहभागिता व उपस्थिति विशेष रूप से सराहनीय रही।

राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम का संचालन डॉ. पूनम शाक्या एवं आभार प्रदर्शन डॉ. राजेश कुमार शर्मा, अधिष्ठाता, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर द्वारा किया गया।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि.,
जबलपुर (म.प्र.)